फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा (क़िस्त : 13)

Sadate Kiram Ki Azamat (Hindi)

सादाते किराम की अ़-ज़मत

(मअ़ दीगर दिलचस्प सुवाल व जवाब)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دامت برکاتہم العالیہ के म-दनी मुज़ा-करे की रोशनी में मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के शो'बे "फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा" की त़रफ़ से नए मवाद के काफ़ी इज़ाफ़े के साथ मुरत्तब किया गया है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَكَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (المُستطرَف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

सादाते किराम की अ़-ज़मत

येह रिसाला "**सादाते किराम की अ़-ज़मत**"

दा'वते इस्लामी की मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)" ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है । मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक-त-बतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है ।

इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबित़ा : **मजलिसे तराजिम** (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये !

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के बानी, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने मख़्सूस अन्दाज़ में सुन्नतों भरे बयानात, इल्मो ह़िक्मत से मा'मूर म-दनी मुज़ा-करात और अपने तरबियत याफ़्ता मुबल्लिग़ीन के ज़रीए थोड़े ही अ़र्से में लाखों मुसल्मानों के दिलों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया है, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सोह़बत से फ़ाएदा उठाते हुए कसीर इस्लामी भाई वक़्तन फ़ वक़्तन मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर होने वाले म-दनी मुज़ा-करात में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मौज़ूआ़त म-सलन अ़क़ाइद व आ'माल, फ़ज़ाइल व मनाक़िब, शरीअ़त व त़रीक़त, तारीख़ व सीरत, साइन्स व त़िब्ब, अख़्लाक़िय्यात व इस्लामी मा'लूमात, रोज़ मर्रा मुआ़-मलात और दीगर बहुत से मौज़ूआ़त से मु-तअ़ल्लिक़ सुवालात करते हैं और शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उन्हें ह़िक्मत आमोज़ और इ़श्क़े रसूल में डूबे हुए जवाबात से नवाज़ते हैं।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इन अ़त़ा कर्दा दिलचस्प और इल्मो ह़िक्मत से लबरेज़ म-दनी फूलों की ख़ुश्बूओं से दुन्या भर के मुसल्मानों को महकाने के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का शो'बा **''फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा''** इन म-दनी मुज़ा-करात को काफ़ी तरामीम व इज़ाफ़ों के साथ **''फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा''** के नाम से पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा है। इन तह़रीरी गुलदस्तों का मुत़ा-लआ़ करने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अ़क़ाइदो आ'माल और ज़ाहिरो बात़िन की इस्लाह़, मह़ब्बते इलाही व इ़श्क़े रसूल की ला ज़वाल दौलत के साथ साथ मज़ीद हुसूले इल्मे दीन का जज़्बा भी बेदार होगा।

इस रिसाले में जो भी ख़ूबियां हैं यक़ीनन रब्बे रह़ीम عَزَّوَجَلَّ और उस के मह़बूबे करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की इ़नायतों और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की शफ़्क़तों और पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा हैं और ख़ामियां हों तो उस में हमारी गै़र इरादी कोताही का दख़्ल है।

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)
5 र-मज़ानुल मुबारक 1436 सि.हि.\ 23 जून 2015 सि.ई

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

सादाते किराम की अ़-ज़मत

(मअ़ दीगर दिलचस्प सुवाल व जवाब)

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (29 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात का अनमोल ख़ज़ाना हाथ आएगा ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान, शहन्शाहे कौनो मकान, सुल्त़ाने इन्सो जान, रह़मते आ़-लमिय्यान, सरदारे दो जहान, सरवरे ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है : जिस ने दिन और रात में मेरी त़रफ़ शौक़ व मह़ब्बत की वज्ह से तीन तीन मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि वोह उस के उस दिन और उस रात के गुनाह बख़्श दे ।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पढ़ता रहूं कसरत से दुरूद उन पे सदा मैं
और ज़िक्र का भी शौक़ पए ग़ौसो रज़ा दे

(वसाइले बख़्शिश)

मदीना

1 ..... مُعجمِ کبیر، ۱۸/۳۶۲، حدیث: ۹۲۸

www.dawateislami.net

सय्यिद की ता'रीफ़

अ़र्ज़ : सय्यिद किसे कहते हैं ?

इर्शाद : सय्यिद का लुग़वी मा'ना ''सरदार'' है मगर पाक व हिन्द में इस्तिलाह़न वोह लोग सय्यिद कहलाते हैं जो ह़-सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की औलाद हैं जब कि अ़रब शरीफ में हर मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्स को ''सय्यिद'' और ह़-सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की औलाद को ''शरीफ़'' कहा जाता है। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ''सय्यिद'' सिब्तैने करीमैन (या'नी ह़-सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की औलाद को कहते हैं।[1]

अमीरे अहले सुन्नत और सय्यिद ज़ादे का अदब

अ़र्ज़ : (अ़रब अमारात के क़ियाम के दौरान बा'ज़ टेस्ट (Test) करवाने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ एक साह़िब की वसात़त से दुबई के एक अस्पताल की लेबोरेट्री में तशरीफ़ ले गए, अपने पेशाब की शीशी (Urine Bottle) उन साह़िब के तक़ाज़े के बा वुजूद उन्हें उठाने के लिये न दी। बा'द में आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की ख़िदमत में अ़र्ज़ की गई) आप ने उन साह़िब को अपनी (Urine Bottle) नहीं दी इस में क्या ह़िक्मत थी ?

مدینہ

1..... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 13, स. 361

www.dawateislami.net

इर्शाद : सय्यिद साहि़ब थे मैं उन को अपने पेशाब की बोतल कैसे पकड़ाता ? अगर क़ियामत के रोज़ सय्यिद साहि़ब के जद्दे आ'ला, हमारे प्यारे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमा दिया कि इल्यास ! क्या तेरा पेशाब उठाने के लिये मेरा बेटा ही रह गया था ? तो उस वक़्त मैं क्या जवाब दूंगा ? सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सादाते किराम की निस्बत और इन की मह़ब्बत की वज्ह से सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का कौन सा उम्मती और सादाते किराम का ख़ादिम ऐसा करना गवारा करेगा ? सादाते किराम से अ़क़ीदतो मह़ब्बत रखना और इन का अ-दबो एह़तिराम बजा लाना इन्तिहाई ज़रूरी है ।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शहाबुद्दीन अह़मद बिन मुह़म्मद क़स्त़लानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम त़बरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तमाम अहले बैते इ़ज़ाम और इन की ज़ुर्रिय्यत (या'नी औलाद) की मह़ब्बत फ़र्ज़ फ़रमा दी है ।[1] **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें सादाते किराम की सच्ची पक्की मह़ब्बत नसीब फ़रमाए और इन का अ-दबो एह़तिराम करने

مدینہ

1 ...... مواھب اللدنیۃ، المقصد السابع، الفصل الثالث فی ذکر محبۃ اصحابہ...الخ، ۲/۵۲۷

www.dawateislami.net

की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए ।[1]

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

सादाते किराम की अ़-ज़मत

अ़र्ज़ : बा'ज़ लोग सादाते किराम के बारे में बदगोई शुरूअ़ कर देते हैं, ऐसों के बारे में आप क्या इर्शाद फ़रमाते हैं ?

इर्शाद : ग़ीबत तो हर मुसल्मान की ह़राम है चे जाए कि सादाते

مدینہ

1...... शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ह़ज़राते सादाते किराम से बे पनाह मह़ब्बत फ़रमाते हैं और इन की ता'ज़ीमो तौक़ीर बजा लाने में पेश पेश रहते हैं। दौराने मुलाक़ात अगर आप को बता दिया जाए कि येह सय्यिद साह़िब हैं तो बारहा देखा गया है कि आप ख़ुद उ़ल्लुवे मर्तबत होने के बा वुजूद निहायत ही आ़जिज़ी के साथ सय्यिद ज़ादे के हाथ चूम लिया करते हैं । सादाते किराम के बच्चों से इन्तिहाई मह़ब्बत और शफ़्क़त करना येह आप ही का तुर्रए इम्तियाज़ है बारहा ऐसा भी हुवा है कि इन के नन्हे मुन्ने क़दमों को अपने सर पर लेते हैं। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इस बात को ख़िलाफ़े अदब समझते हैं कि सय्यिद ज़ादों की त़रफ़ पाउं फैलाए जाएं या उन की त़रफ़ पीठ की जाए । आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को अक्सर अवक़ात महाफ़िल में लोग मस्नद पर बिठाते हैं तो बारहा येह बात मुशा-हदे में आई है कि आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه बे क़रार हो कर फ़रमाते हैं आप लोग मुझे मस्नद पर बिठाते हैं ह़ालां कि मुअ़ज़्ज़ज़ सादाते किराम नीचे बैठे हैं । कभी कभी येह भी देखा गया है कि जब बे क़रारी बढ़ जाती है तो आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मस्नद छोड़ देते हैं और मा'ज़िरत कर लेते हैं कि येह अच्छा नहीं लग रहा कि सादाते किराम नीचे हों और मैं ग़ुलाम ऊपर । कभी कभी किसी सय्यिद ज़ादे को देख कर आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت का येह शे'र झूम झूम कर पढ़ने लगते हैं

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का
तू है ऐ़ने नूर तेरा सब घराना नूर का

www.dawateislami.net

किराम की हो । सादाते किराम की बदगोई व मुख़ा-लफ़त करते वक़्त येह बात ज़ेह्न नशीन फ़रमा लिया करें कि आप जिस को सय्यिद या'नी रसूले पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बेटा तस्लीम कर रहे हैं अब उसी आक़ा ज़ादे की बदगोई भी कर रहे हैं ! अगर रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नाराज़ हो गए तो क्या करेंगे ? इस ज़िम्न में एक हिकायत मुला-हज़ा फ़रमाइये और सादाते किराम की बदगोई से बचते हुए इन का अ-दबो एह़तिराम बजा लाइये चुनान्चे

एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कहीं तशरीफ़ लिये जा रहे थे कि एक नादार सय्यिद ज़ादे ने कहा : आप का तो ख़ूब ठाठ है और मैं सय्यिद ज़ादा होने के बा वुजूद कम-मर्तबा हूं। इस पर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : आप के नानाजान बेशक सुल्ताने दो जहान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं जब कि मेरे बाप दादा का कोई मक़ाम नहीं था। मैं ने आप के नानाजान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी की और इ़ज़्ज़त पाई मगर आप मेरे बाप दादा की पैरवी कर के रुस्वा हो गए । उसी रात ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ख़्वाब में जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की । सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नाराज़ पा कर होश उड़ गए, घबरा कर नाराज़ होने का सबब दरयाफ़्त किया, इर्शाद

www.dawateislami.net

हुवा : "तू ने मेरी औलाद की ऐ़ब पोशी क्यूं नहीं की ?" चुनान्चे सुब्ह़ बेदार हो कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه उस सय्यिद ज़ादे की तलाश में निकल पड़े, उधर उन सय्यिद ज़ादे ने भी रात ख़्वाब में अपने नानाजान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की सआ़दत ह़ासिल की। सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमा रहे थे : "अगर तेरे आ'माल दुरुस्त होते तो अ़ब्दुल्लाह तेरी तौहीन क्यूं करता।" चुनान्चे सय्यिद साहि़ब भी सुब्ह़ बेदार हो कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की तलाश में निकल पड़े थे। एक मक़ाम पर दोनों ह़ज़रात की इत्तिफ़ाक़न मुलाक़ात हो गई, दोनों ने अपने अपने ख़्वाब सुनाए और एक दूसरे से मुआ़फ़ी चाही। वोह सय्यिद साहि़ब भी ताइब हो कर सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने पर कमर बस्ता हो गए।[1] बहर ह़ाल हमें सादाते किराम का अ-दबो एह़तिराम करते हुए इन के साथ हुस्ने सुलूक का ही मुज़ा-हरा करना चाहिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से दुन्या व आख़िरत की बे शुमार भलाइयां नसीब होंगी।

सादाते किराम की ता'ज़ीमो तक्रीम की वज्ह

अ़र्ज़ : सादाते किराम की इस क़दर ता'ज़ीमो तक्रीम की क्या वज्ह है ?

इर्शाद : सादाते किराम की ता'ज़ीमो तक्रीम की अस्ल वज्ह येही

مدینہ

1 ...... تذکرۃ الاولیاء، باب پانزدھم، ذکر عبد اللہ بن مبارک، ص ۱۷۰، الجزء: ۱ ماخوذاً

www.dawateislami.net

है कि येह ह़ज़रात रसूले काएनात, शहन्शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जिस्मे अत़्हर का टुकड़ा हैं । मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 22 सफ़ह़ा 423 पर फ़रमाते हैं : सय्यिद सुन्निय्युल मज़हब की ता'ज़ीम लाज़िम है अगर्चे उस के आ'माल कैसे ही हों, उन आ'माल के सबब उस से तनफ़्फ़ुर न किया (या'नी नफ़रत न की) जाए, नफ़्से आ'माल से तनफ़्फ़ुर (या'नी फ़क़त़ उस की बुराइयों से नफ़रत) हो । सादाते किराम की इन्तिहाए नसब हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर है, (या'नी इन के जद्दे आ'ला तो मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं !) इस फ़ज़्ले इन्तिसाब (निस्बत की फ़ज़ीलत) की ता'ज़ीम (आ़म से मुसल्मान तो क्या) हर मुत्तक़ी पर (भी) फ़र्ज़ है (क्यूं) कि वोह इस (सय्यिद साह़िब) की ता'ज़ीम नहीं (बल्कि ख़ुद) हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम है ।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा क़ाज़ी इ़याज़ मालिकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीमो तौक़ीर में से येह भी है कि वोह तमाम चीज़ें जो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से निस्बत रखती हैं उन की

مدینہ

1 ..... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 423, मुल-त़-क़तन

www.dawateislami.net

ता'ज़ीम की जाए और मक्कए मुकर्रमा व मदीनए मुनव्वरह زَادَهُمَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا के जिन मक़ामात को आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुशर्रफ़ फ़रमाया उन का भी अ-दबो एह़तिराम किया जाए और जिन जगहों में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़ियाम फ़रमाया और वोह सारी चीज़ें जिन को आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने छुवा या आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ मश्हूर हो गईं उन सब की ता'ज़ीमो तक्रीम की जाए ।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कौन सा ऐसा मुसल्मान है जिस के दिल में मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की मह़ब्बत व अ-ज़मत न हो, जो शबो रोज़ इस दियारे ह़बीब के फ़िराक़ में मचलता न हो, जिस की आंखें इस शह्र के दरो दीवार की एक झलक के लिये बेताब व अश्कबार न रहती हों, जब प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से निस्बत के सबब एक मुसल्मान के दिल में मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا के दरो दीवार, कूचा व बाज़ार, सह़रा व कोहसार का येह मक़ाम है तो प्यारे मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जिगर के टुकड़ों या'नी सय्यिद ज़ादों का क्या मक़ाम होगा ?

हम को सारे सय्यिदों से प्यार है
अपना बेड़ा पार है اِنْ شَآءَاللّٰه

مدینہ

1 ..... اَلشِّفا، الباب الثالث فی تعظیم امرہ، فصل ومن اِعظامہ... الخ، ص ۵۶، الجزء: ۲

www.dawateislami.net

अ-ज़-मते सादाते किराम और इमाम अह़मद रज़ा ख़ान

अ़र्ज़ : आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت के सादाते किराम की ता'ज़ीमो तौक़ीर करने का कोई वाक़िआ़ इर्शाद फ़रमा दीजिये ।

इर्शाद : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن को सादाते किराम से बेह़द अ़क़ीदतो मह़ब्बत थी और येह अ़क़ीदतो मह़ब्बत सिर्फ़ ज़बानी कलामी न थी बल्कि आप दिल की गहराइयों से सादाते किराम से मह़ब्बत फ़रमाते और अगर कभी ला शुऊ़री में कोई तक़्सीर वाक़ेअ़ हो जाती तो ऐसे अनोखे त़रीक़े से उस का इज़ाला फ़रमाते कि देखने सुनने वाले वर्त़ए ह़ैरत में डूब जाते चुनान्चे इस ज़िम्न में एक वाक़िआ़ पेशे ख़िदमत है : मदीनतुल मुर्शिद बरेली शरीफ़ के किसी मह़ल्ले में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن मद्ऊ़ थे । इरादत मन्दों ने अपने यहां लाने के लिये पालकी का एहतिमाम किया । चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه सुवार हो गए और चार मज़दूर पालकी को अपने कन्धों पर उठा कर चल दिये । अभी थोड़ी ही दूर गए थे कि यकायक इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने पालकी में से आवाज़ दी : "पालकी रोक दो ।" पालकी रुक गई । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़ौरन बाहर तशरीफ़ लाए और भर्राई हुई आवाज़ में मज़दूरों से फ़रमाया : सच सच बताएं आप में सय्यिद ज़ादा कौन है ?

www.dawateislami.net

क्यूं कि मेरा ज़ौक़े ईमान सरवरे दो जहां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुश्बू महसूस कर रहा है। एक मज़दूर ने आगे बढ़ कर अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! मैं सय्यिद हूं। अभी उस की बात मुकम्मल भी न होने पाई थी कि आ़लमे इस्लाम के मुक़्तदिर पेश्वा और अपने वक़्त के अ़ज़ीम मुजद्दिद आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने अपना इ़मामा शरीफ़ उस सय्यिद ज़ादे के क़दमों में रख दिया। इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت की आंखों से टप टप आंसू गिर रहे हैं और हाथ जोड़ कर इल्तिजा कर रहे हैं, मुअ़ज़्ज़ज़ शहज़ादे ! मेरी गुस्ताख़ी मुआ़फ़ कर दीजिये, बे ख़यााली में मुझ से भूल हो गई, हाए ग़ज़ब हो गया ! जिन की ना'ले पाक मेरे सर का ताजे इ़ज़्ज़त है, उन के कन्धे पर मैं ने सुवारी की, अगर बरोज़े क़ियामत ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछ लिया कि अह़मद रज़ा ! क्या मेरे फ़रज़न्द का दोशे नाज़नीन इस लिये था कि वोह तेरी सुवारी का बोझ उठाए तो मैं क्या जवाब दूंगा ! उस वक़्त मैदाने मह़शर में मेरे नामूसे इ़श्क़ की कितनी ज़बर दस्त रुस्वाई होगी। कई बार ज़बान से मुआ़फ़ कर देने का इक़्रार करवा लेने के बा'द इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने आख़िरी इल्तिजाए शौक़ पेश की, मोह़तरम शहज़ादे ! इस ला शुऊ़री में होने वाली ख़त़ा का कफ़्फ़ारा जभी अदा होगा कि अब आप पालकी में सुवार होंगे और मैं पालकी को कांधा दूंगा। इस इल्तिजा पर लोगों की आंखों से आंसू बहने

www.dawateislami.net

लगे और बा'ज़ की तो चीख़ें भी बुलन्द हो गईं। हज़ार इन्कार के बा'द आख़िरे कार मज़दूर शहज़ादे को पालकी में सुवार होना ही पड़ा। येह मन्ज़र किस क़दर दिलसोज़ है, अहले सुन्नत का जलीलुल क़द्र इमाम मज़दूरों में शामिल हो कर अपनी ख़ुदादाद इल्मिय्यत और आ़लमगीर शोहरत का सारा ए'ज़ाज़ ख़ुशनूदिये महबूब की ख़ातिर एक गुमनाम मज़दूर शहज़ादे के क़दमों पर निसार कर रहा है।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने ला शुऊ़री में हो जाने वाली ख़ता की न सिर्फ़ मुआ़फ़ी चाही बल्कि ता'ज़ीमे सादात की ख़ातिर अपने मक़ाम व मर्तबे की परवाह किये बिग़ैर कहारों में शामिल हो कर उस सय्यिद ज़ादे की पालकी भी अपने कन्धों पर उठाई। سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! जिन की उल्फ़ते आले रसूल की येह ह़ालत हो उन के इ़श्क़े रसूल का क्या आ़लम होगा ?

सादाते किराम को मुलाज़िम रखना कैसा ?

अ़र्ज़ : सादाते किराम को मुलाज़िम रखना कैसा है ?

इर्शाद : सादाते किराम को ऐसे काम पर मुलाज़िम रखा जा सकता है जिस में ज़िल्लत न पाई जाती हो अलबत्ता ज़िल्लत वाले कामों में उन्हें मुलाज़िम रखना जाइज़ नहीं। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम

1 ..... अन्वारे रज़ा, स. 415

www.dawateislami.net

अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن की बारगाह में सुवाल हुवा कि ''सय्यिद के लड़के से, जब शागिर्द हो या मुलाज़िम हो दीनी या दुन्यावी ख़िदमत लेना और इस को मारना जाइज़ है या नहीं ? तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जवाबन इर्शाद फ़रमाया : ज़लील ख़िदमत इस से लेना जाइज़ नहीं। न ऐसी ख़िदमत पर इसे मुलाज़िम रखना जाइज़ और जिस ख़िदमत में ज़िल्लत नहीं उस पर मुलाज़िम रख सकता है। बह़ाले शागिर्द भी जहां तक उ़र्फ़ और मा'रूफ़ हो (ख़िदमत लेना) शरअ़न जाइज़ है ले सकता है और इसे (या'नी सय्यिद को) मारने से मुत़्लक़ एह़तिराज़ (या'नी बिल्कुल परहेज़) करे।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि सादाते किराम को ज़िल्लत वाले कामों में मुलाज़िम रखने और इन्हें मारने की इजाज़त नहीं। इस ज़िम्न में आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت की एह़तियात़ और अ-ज़-मते सादाते किराम मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे ह़याते आ'ला ह़ज़रत में है : जनाब सय्यिद अय्यूब अ़ली साह़िब (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) का बयान है : एक कम उ़म्र साह़िब ज़ादे ख़ानादारी के कामों में इमदाद के लिये (आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت के) काशानए अक़्दस में मुलाज़िम हुए। बा'द में मा'लूम हुवा कि येह सय्यिद ज़ादे हैं लिहाज़ा (आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने) घर वालों को ताकीद फ़रमा दी कि साह़िब ज़ादे साह़िब से

مدینہ

1 ..... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 568

www.dawateislami.net

ख़बरदार कोई काम न लिया जाए कि मख़्दूम ज़ादा हैं (या'नी प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रज़न्दे अरजुमन्द हैं इन से ख़िदमत नहीं लेनी बल्कि इन की ख़िदमत करनी है लिहाज़ा) खाना वग़ैरा और जिस शै की ज़रूरत हो (इन की ख़िदमत में) हाज़िर की जाए। जिस तन-ख़्वाह का वा'दा है वोह बतौ़रे नज़राना पेश होता रहे, चुनान्चे ह़स्बुल इर्शाद ता'मील होती रही। कुछ अ़र्से के बा'द वोह साह़िब ज़ादे ख़ुद ही तशरीफ़ ले गए।[1] **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

सय्यिद के नसब का सुबूत

अ़र्ज़ : अगर किसी के सय्यिद होने का सुबूत न हो तो क्या उस की भी ता'ज़ीम की जाएगी ?

इर्शाद : ता'ज़ीम के लिये न यक़ीन दरकार है और न ही किसी ख़ास सनद की ह़ाजत लिहाज़ा जो लोग सादात कहलाते हैं उन की ता'ज़ीम करनी चाहिये, उन के ह़सब व नसब की तह़क़ीक़ में पड़ने की ह़ाजत नहीं और न ही हमें इस का हुक्म दिया गया है। आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت से सादाते किराम से सय्यिद होने की सनद त़लब करने और न मिलने पर बुरा भला कहने वाले शख़्स के बारे में इस्तिफ़्सार हुवा तो आप

مدینہ

1 ..... ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 179

www.dawateislami.net

رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِ ने जवाबन इर्शाद फ़रमाया : फ़क़ीर बारहा फ़तवा दे चुका है कि किसी को सय्यिद समझने और उस की ता'ज़ीम करने के लिये हमें अपने ज़ाती इ़ल्म से उसे सय्यिद जानना ज़रूरी नहीं, जो लोग सय्यिद कहलाए जाते हैं हम उन की ता'ज़ीम करेंगे, हमें तह़क़ीक़ात की ह़ाजत नहीं, न सियादत की सनद मांगने का हमें हुक्म दिया गया है और ख़्वाही न ख़्वाही सनद दिखाने पर मजबूर करना और न दिखाएं तो बुरा कहना, मत़ऊ़न करना हरगिज़ जाइज़ नहीं । اَلنَّاسُ اُمَنَاءُ عَلٰی اَنْسَابِہِم (लोग अपने नसब पर अमीन हैं) । हां जिस की निस्बत हमें ख़ूब तह़क़ीक़ मा'लूम हो कि येह सय्यिद नहीं और वोह सय्यिद बने उस की हम ता'ज़ीम न करेंगे, न उसे सय्यिद कहेंगे और मुनासिब होगा कि ना वाक़िफ़ों को उस के फ़रेब से मुत्तलअ़ कर दिया जाए । मेरे ख़याल में एक ह़िकायत है जिस पर मेरा अ़मल है कि एक शख़्स किसी सय्यिद से उलझा, उन्हों ने फ़रमाया : मैं सय्यिद हूं, कहा : क्या सनद है तुम्हारे सय्यिद होने की ? रात को ज़ियारते अक़्दस से मुशर्रफ़ हुवा कि मा'रिकए ह़श्र है, येह शफ़ाअ़त ख़्वाह हुवा, ए'राज़ फ़रमाया । उस ने अ़र्ज़ की : मैं भी हुज़ूर का उम्मती हूं । फ़रमाया : क्या सनद है तेरे उम्मती होने की ?[1]

[1]...... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 29, स. 587 ता 588

www.dawateislami.net

ग़ैरे सय्यिद, सय्यिद होने का दा'वा करे तो ?

अ़र्ज़ : अगर कोई सख़्स सय्यिद न हो और सय्यिद होने का दा'वा करे तो उस के बारे में क्या हुक्म है ?

इर्शाद : जो वाक़ेअ़ में सय्यिद न हो और दीदा व दानिस्ता (जान बूझ कर) सय्यिद बनता हो वोह मल्ऊ़न (ला'नत किया गया) है, न उस का फ़र्ज़ क़बूल हो न नफ़्ल। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जो कोई अपने बाप के सिवा किसी दूसरे या किसी ग़ैर वाली की त़रफ़ मन्सूब होने का दा'वा करे तो उस पर **अल्लाह** तआ़ला, फ़िरिश्तों और सब लोगों की ला'नत है **अल्लाह** तआ़ला क़ियामत के दिन उस का न कोई फ़र्ज़ क़बूल फ़रमाएगा और न ही कोई नफ़्ल।[1] मगर येह उस का मुआ़-मला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के यहां है, हम बिला दलील तक्ज़ीब नहीं कर सकते, अलबत्ता हमारे इ़ल्म (में) तह़क़ीक़ त़ौर पर मा'लूम है कि येह सय्यिद न था और अब सय्यिद बन बैठा उसे हम भी फ़ासिक़ व मुर-तकिबे कबीरा व मुस्तह़िक़े ला'नत जानेंगे।[2]

बद मज़हब सय्यिद का हुक्म

अ़र्ज़ : अगर कोई बद मज़हब सय्यिद होने का दा'वा करे तो क्या उस की भी ता'ज़ीमो तकरीम की जाएगी ?

مدینہ

1 ...... مُسلِم، کتاب الحج، باب فضل المدینة...الخ، ص ۷۱۲، حدیث: ۱۳۷۰

2 ...... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 198

www.dawateislami.net

इर्शाद : अगर कोई बद मज़हब सय्यिद होने का दा'वा करे और उस की बद मज़हबी ह़द्दे कुफ़्र तक पहुंच चुकी हो तो हरगिज़ उस की ता'ज़ीम न की जाएगी । मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : सादाते किराम की ता'ज़ीम हमेशा (की जाएगी) जब तक उन की बद मज़हबी ह़द्दे कुफ़्र को न पहुंचे कि इस के बा'द वोह सय्यिद ही नहीं, नसब मुन्क़त़अ़ है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक में इर्शाद फ़रमाता है :

﴿قَالَ یٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَیْسَ مِنْ اَهْلِكَ ۚ اِنَّهٗ عَمَلٌ غَیْرُ صَالِحٍ ۫﴾ (پ۱۲، ھود:۴۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ''फ़रमाया ! ऐ नूह़ ! वोह (या'नी तेरा बेटा किन्आ़न) तेरे घर वालों में नहीं बेशक उस के काम बड़े ना लाइक़ हैं ।'' बद मज़हब जिन की बद मज़हबी ह़द्दे कुफ़्र को पहुंच जाए अगर्चे सय्यिद मश्हूर हों न सय्यिद हैं, न इन की ता'ज़ीम ह़लाल बल्कि तौहीन व तक्फ़ीर फ़र्ज़ ।[1] सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नई़मुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِی मज़्कूरा बाला आयते करीमा के तह़्त फ़रमाते हैं : इस से साबित हुवा कि नस्बी क़राबत से दीनी क़राबत ज़ियादा क़वी है ।[2]

مدینہ

1 ..... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 421, मुलख़्ख़सन

2 ..... ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, पारह : 12, हूद, तह़्तल आयह : 46

www.dawateislami.net

सरकार عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द सब से अफ़्ज़ल

अ़र्ज़ : सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द सब से अफ़्ज़ल कौन है ?

इर्शाद : दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 52 पर है : नबियों के मुख़्तलिफ़ द-रजे हैं, बा'ज़ को बा'ज़ पर फ़ज़ीलत है और सब में अफ़्ज़ल हमारे आक़ा व मौला सय्यिदुल मुर-सलीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं, हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के बा'द सब से बड़ा मर्तबा ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام का है, फिर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام, फिर ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام और ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام का, इन ह़ज़रात को मुर-सलीने ऊलुल अ़ज़्म (बुलन्दो बाला इ़ज़्ज़तो अ़-ज़मत और ह़ौसले वाले) कहते हैं और येह पांचों ह़ज़रात बाक़ी तमाम अम्बिया व मुर-सलीन, इन्सो म-लको जिन्न व जमीअ़ मख़्लूक़ाते इलाही से अफ़्ज़ल हैं।

सब से अफ़्ज़ल उम्मत

अ़र्ज़ : कौन सी उम्मत सारी उम्मतों से अफ़्ज़ल है ? नीज़ इस की अफ़्ज़लिय्यत की वज्ह भी बयान फ़रमा दीजिये।

इर्शाद : जिस त़रह़ हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) तमाम रसूलों के

www.dawateislami.net

सरदार और सब से अफ़्ज़ल हैं, बिला तश्बीह हु़ज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के सदके़ में हु़ज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की उम्मत तमाम उम्मतों से अफ़्ज़ल ।[1] اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! हम कितने खु़श नसीब हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दामने करम हमारे हाथों में आया यक़ीनन हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम अम्बियाए किराम عَلٰی نَبِیِّنَا وعَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में सब से अफ़्ज़ल हैं। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदके़ में आप की उम्मत भी पिछली तमाम उम्मतों से अफ़्ज़ल है और अफ़्ज़लिय्यत की वज्ह हरगिज़ हरगिज़ येह नहीं कि इस उम्मत में कसरत से सरमाया दार होंगे, इन में इन्जीनियर और डॉक्टर कसीर होंगे, न ही फ़ज़ीलत कि येह वज्ह है कि येह जंगजू और बहादुर और क़वी होंगे या येह इस लिये अफ़्ज़ल हैं कि निहायत ही चालाक व ज़ीरक होंगे बल्कि इन की अफ़्ज़लिय्यत की वज्ह तो येह है कि ‘‘اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَر’’ या’नी नेकी की दा’वत देने और बुराई से मन्अ़ करने के अहम मन्सब पर फ़ाइज़ हैं चुनान्चे पारह 4, **सूरए आले इमरान** की आयत नम्बर 110 में खु़दाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

مدینہ

1...... बहारे शरीअ़त, जि. 1, हि़. 1, स. 54

www.dawateislami.net

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ تَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ؕ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम बेहतर हो उन सब उम्मतों में जो लोगों में ज़ाहिर हुई भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मन्अ़ करते हो और **अल्लाह** पर ईमान रखते हो।

इस आयते मुबा-रका के तह़्त तफ़्सीरे ख़ाज़िन में है : इस उम्मत को ''اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَر'' की बदौलत दीगर तमाम उम्मतों पर फ़ज़ीलत दी गई है और इसी सबब से येह उम्मत तमाम उम्मतों में सब से बेहतरीन उम्मत है, पस साबित हुवा कि इस उम्मत के बेहतरीन होने की वज्ह इस के अफ़राद का नेकी की दा'वत देना और बुराई से मन्अ़ करना है।[1] **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अपने इस मन्सबे आ़ली को समझने और इस पर अ़मल पैरा होने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

मुझे तुम ऐसी दो हिम्मत आक़ा
दूं सब को नेकी की दा'वत आक़ा
बना दो मुझ को भी नेक ख़स्लत
नबिय्ये रह़मत शफ़ीए उम्मत

(वसाइले बख़्शिश)

उम्मते मुह़म्मदिय्यह के फ़ज़ाइल

अ़र्ज़ : इस उम्मत के कुछ फ़ज़ाइल भी बयान फ़रमा दीजिये।

مدینہ

1 ...... تفسیرِ خازن، پ۴، آل عمران، تحت الآیۃ: ۱۱۰، ۱/۲۸۹

www.dawateislami.net

इर्शाद : मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان मज़्कूरा आयते मुबा-रका की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के बे शुमार फ़ज़ाइल हैं, यहां उन में से कुछ अ़र्ज़ किये जाते हैं : (1) येह उम्मत आख़िरे उमम है, गुज़श्ता उम्मतों के उ़यूब क़ुरआने करीम में बयान हुए, जिस से वोह सारी दुन्या में बदनाम हो गईं, मगर इस उम्मत के बा'द न कोई नया नबी आएगा, न कोई आस्मानी किताब जिस में इस के उ़यूब बयान हों, ग़-रज़े कि इस उम्मत की पर्दा पोशी की गई। (2) पिछली कुतुब में इस उम्मत के औसाफ़ का ज़िक्र तो था इन के उ़यूब का तज़्किरा न था जिस के बाइ़स वोह लोग इस उम्मत में होने की तमन्ना करते थे। (3) जैसे रब तआ़ला ने दीगर अम्बियाए किराम (عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) को नाम ले कर पुकारा हमारे हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अल्क़ाब से, इसी त़रह़ इन की उम्मतों को न-सबी नामों से पुकारा गया : ﴿يٰبَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ، يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوْۤا﴾ वग़ैरा मगर इस उम्मत को ﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا﴾ के दिलकश व प्यारे ख़ित़ाब से नवाज़ा गया। (4) पिछली उम्मतें अपने नबियों के बा'द सारी ही गुमराह हो जाती थीं मगर इस उम्मत में ता क़ियामत एक फ़िर्क़ा (सवादे आ'ज़म या'नी अहले सुन्नत व जमाअ़त) ह़क़ पर रहेगा। (5) इस उम्मत में हमेशा औलियाउल्लाह व उ़-लमाए रब्बानी होते रहेंगे, जिस दरख़्त की जड़ हरी रहे

www.dawateislami.net

उस में फल फूल आते ही रहते हैं । (6) येही उम्मत कल क़ियामत के दिन बारगाहे इलाही में गुज़श्ता नबियों की गवाही देगी कि ख़ुदाया ! इन्हों ने अपनी क़ौमों को तब्लीग़ की थी ।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : लोगों पर हमें तीन चीज़ों की वज्ह से फ़ज़ीलत दी गई है : (1) हमारी सफ़ें मलाएका की सफ़ों की मिस्ल की गईं (2) हमारे लिये तमाम ज़मीन मस्जिद कर दी गई है (3) जब हम पानी न पाएं तो ज़मीन की ख़ाक हमारे लिये पाको साफ़ और पाक करने वाली बनाई गई ।[2]

शुक्र अदा हो क्यूंकर तेरा प्यारे नबी की उम्मत में
मुझ से निकम्मे को भी पैदा तूने ऐ रह़मान किया

(वसाइले बख़्शिश)

किसी को हंसता देख कर पढ़ने की दुआ

अ़र्ज़ : हंसने की कितनी अक़्साम हैं ? नीज़ किसी इस्लामी भाई को हंसता देख कर कौन सी दुआ पढ़नी चाहिये ?

مدینہ

1 .....तफ़्सीरे नईमी, पारह : 4, आले इमरान, तह़्तल आयह : 110, जि. 4, स. 91

2 ..... مُسلِم، کتاب المساجد و مواضع الصلاۃ، ص ۲۶۵-۲۶۶، حدیث: ۵۲۲

www.dawateislami.net

इर्शाद : हंसने की तीन क़िस्में हैं : (1) तबस्सुम (2) ज़िह्क (3) क़ह्क़हा । फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के नज़्दीक इस त़रह़ हंसना कि सिर्फ़ दांत ज़ाहिर हों आवाज़ पैदा न हो येह ''तबस्सुम'' कहलाता है और इस त़रह़ हंसना कि थोड़ी आवाज़ भी पैदा हो जो ख़ुद सुनी जाए दूसरा न सुने तो येह ''ज़िह्क'' है और इस त़रह़ हंसना कि ज़ियादा आवाज़ पैदा हो कि दूसरा भी सुने और मुंह खुल जाए तो येह ''क़ह्क़हा'' है। नमाज़ में तबस्सुम करने से न नमाज़ जाए न वुज़ू, हंसने से नमाज़ जाती रहेगी और क़ह्क़हा लगाने से नमाज़ और वुज़ू दोनों जाते रहते हैं ।[1]

ह़दीसे पाक में है : اَلْقَهْقَهَةُ مِنَ الشَّيْطَانِ وَالتَّبَسُّمُ مِنَ اللهِ या'नी क़ह्क़हा शैत़ान की त़रफ़ से है और मुस्कुराना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ।[2] हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के लिये जहां कहीं लफ़्ज़ ''ज़िह्क'' आता है वहां तबस्सुम मुराद होता है क्यूं कि हुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने कभी ठठ्ठा न लगाया ।[3] ख़याल रहे कि मुस्कुराना अच्छी चीज़ है और क़ह्क़हा बुरी चीज़, तबस्सुम हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

مدینہ

1 ..... मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 401, मुलख़्ख़सन

2 ..... مُعجمِ صغیر، من اسمہ محمد، ص۱۰۴، حدیث:۱۰۵۷، الجزء:۲

3 ..... मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 66

www.dawateislami.net

की आदते करीमा थी जब किसी से मिलो मुस्कुरा कर मिलो ।[1] **जब** किसी को मुस्कुराता देखें तो येह दुआ पढ़िये : ''اَضْحَكَ اللّٰهُ سِنَّكَ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे मुस्कुराता रखे ।'' जैसा कि रिवायत में है कि एक मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबारे गौहर बार में ह़ाज़िर होने की इजाज़त मांगी, उस वक़्त आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास (अज़्वाजे मुत़ह्हरात में से) क़ुरैशी औ़रतें बैठी हुई थीं जो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से महूवे गुफ़्त-गू थीं, ज़ियादा बख़्शिश का मुत़ा-लबा कर रही थीं और उन की आवाज़ें बुलन्द हो रही थीं । जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इजाज़त मांगी तो वोह जल्दी से उठ कर पर्दे में चली गईं । नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें अन्दर आने की इजाज़त दी, (जब येह अन्दर दाख़िल हुए तो) नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तबस्सुम फ़रमा रहे थे । येह अ़र्ज़ गुज़ार हुए : اَضْحَكَ اللّٰهُ سِنَّكَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ या'नी **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** तआ़ला आप को मुस्कुराता रखे (क्या बात है ?) । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुझे उन औ़रतों पर तअ़ज्जुब है जो मेरे पास ह़ाज़िर थीं कि उन्हों ने जब तुम्हारी आवाज़ सुनी तो जल्दी से उठ कर पर्दे में चली गईं । अ़र्ज़ गुज़ार हुए कि **या रसूलल्लाह**

مدینہ

1 ..... मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 14

www.dawateislami.net

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप इस के ज़ियादा ह़क़्दार हैं कि वोह आप से डरतीं । फिर (ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने उन की जानिब मु-तवज्जेह हो कर) कहा : ऐ अपनी जानों से दुश्मनी करने वालियो ! तुम मुझ से डरती हो लेकिन **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से नहीं डरतीं ? उन्हों ने कहा : हां, आप (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रह़ नहीं बल्कि ग़ुस्से वाले और सख़्त गीर हैं । हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है, शैत़ान तुम्हें किसी रास्ते पर चलता हुवा देखता है तो वोह तुम्हारे रास्ते को छोड़ कर दूसरा रास्ता इख़्तियार कर लेता है ।[1]

गली से इन की शैत़ां दुम दबा कर भाग जाता है
है ऐसा रो'ब ऐसा दबदबा फ़ारूक़े आ'ज़म का

(वसाइले बख़्शिश)

बारह माह के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र का ज़ेह्न

अ़र्ज़ : म-दनी इन्आ़मात व म-दनी क़ाफ़िला कोर्स करने की ब-र-कत से اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मेरा 12 माह के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने का म-दनी ज़ेह्न बना है लेकिन मैं अपने घर

مدینہ

1 ..... بخاری، کتاب بدء الخلق، باب صفة ابلیس وجنودہ، ۲/۴۰۳، حدیث: ۳۲۹۴

www.dawateislami.net

का अकेला ही कफ़ालत करने वाला हूं ऐसी सूरत में मुझे क्या करना चाहिये ?

इर्शाद : इस सुवाल का जवाब आप अपने दिल से पूछ लीजिये कि बिलफ़र्ज़ आप को बैरूने मुल्क नोकरी की पेशकश (Offer) हो तो घर वालों को छोड़ कर आप बैरूने मुल्क जाने के लिये तय्यार होंगे या नहीं ? आप के घर वाले आप को भेजने के लिये राज़ी होंगे या नहीं ? आ़म त़ौर पर येही देखा गया है कि बैरूने मुल्क नोकरी मिलने पर घर वाले न सिर्फ़ राज़ी होते हैं बल्कि बैरूने मुल्क नोकरी करने पर ज़ोर देते हैं। घर वालों को आप की कम और पैसों की ज़ियादा ज़रूरत होती है। अगर बैरूने मुल्क जाने के लिये आप के घर वाले राज़ी हो जाएं तो उस वक़्त घर की कफ़ालत करने वाला कौन होगा ? अगर आप का इन्तिक़ाल हो जाए तो उस वक़्त घर की कफ़ालत कौन करेगा ? उस वक़्त भी तो घर वाले कुछ न कुछ करेंगे। घर वाले फ़क़त़ दुन्या बनाने के लिये जुदाई बरदाश्त करते और क़ुरबानी देते हैं, आख़िरत की बेहतरी के लिये जुदाई बरदाश्त नहीं कर सकते। ह़क़ीक़ी ख़ैर ख़्वाह तो वोह हैं जो दुन्या के बजाए आख़िरत को तरजीह़ दें और ज़ियादा से ज़ियादा नेकियां इकठ्ठी करने का ज़ेह्न दें।

बहर ह़ाल म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने के लिये घर वालों का ज़ेह्न बनाया जाए और उन को इस बात पर आमादा किया जाए कि वोह बख़ुशी इजाज़त दें और आप

www.dawateislami.net

वापस आने तक उन के नान नफ़क़ा का एहतिमाम भी कीजिये ताकि आप की ग़ैर मौजू-दगी में उन्हें किसी क़िस्म की परेशानी का सामना न करना पड़े । अगर आप वापस आने तक उन के नान नफ़क़ा और देखभाल का एहतिमाम नहीं कर सकते तो ऐसी सूरत में जाने की इजाज़त नहीं । इसी त़रह़ अगर आप के वालिदैन या दोनों में से कोई एक ह़यात हों और वोह 12 माह के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने की इजाज़त नहीं देते और वाक़ेई उन को आप की ख़िदमत की ह़ाजत भी है या शफ़क़त की बिना पर इजाज़त नहीं देते तो आप हरगिज़ म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र न कीजिये बल्कि अपने वालिदैन की ख़िदमत कीजिये ।

जद्वल पर अ़मल करना ज़रूरी है

अ़र्ज़ : म-दनी क़ाफ़िले में जद्वल पर अ़मल करना क्यूं ज़रूरी है ?

इर्शाद : दुन्या का हर काम किसी न किसी उसूल के तह़्त होता है तो दीन का काम उसूल के मुत़ाबिक़ क्यूं न हो ? आप किसी भी फ़ेक्ट्री या इदारे को ले लीजिये उस फ़ेक्ट्री या इदारे के बीसियों उसूल व ज़वाबित़ होंगे फिर वोह फ़ेक्ट्री या इदारा अगर बड़े पैमाने पर काम कर रहा है तो वोह कई शो'बों पर मुन्क़सिम होगा । यूं हर फ़ेक्ट्री या इदारे के हर शो'बे की तरक़्क़ी उस के उसूल व ज़वाबित़ पर कारबन्द रहने से ह़ासिल होती है । इसी त़रह़ म-दनी क़ाफ़िले की काम्याबी म-दनी मर्कज़ के दिये गए जद्वल के मुत़ाबिक़ अ़मल करने

www.dawateislami.net

में है।

म-दनी मर्कज़ के अ़ता कर्दा जद्वल पर अ़मल पैरा हो कर ही हम अपने म-दनी मक़्सद **''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है''** में काम्याबी ह़ासिल कर सकते हैं। याद रखिये ! जद्वल बनाने में कई ऐसे मंझे हुए इस्लामी भाइयों की सोचें और तजरिबात कार फ़रमा होते हैं जिन के बरसहा बरस के तजरिबात व मुशा-हदात होते हैं। आप सिर्फ़ अपनी सोच के मुत़ाबिक़ सोचते हैं जब कि म-दनी मर्कज़ दुन्या भर को मद्दे नज़र रखते हुए फ़ैसला करता है। हां ! अगर म-दनी क़ाफ़िले के जद्वल में कोई बात مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ ख़िलाफ़े शर-अ़ हो तो बेशक आप उस पर अ़मल न कीजिये बल्कि फ़ौरी त़ौर पर म-दनी मर्कज़ को आगाह कर के इस्लाह़ कीजिये। जब ऐसा नहीं और यक़ीनन ऐसा नहीं तो आप जद्वल के मुत़ाबिक़ ही म-दनी क़ाफ़िले में अपना वक़्त गुज़ारिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें म-दनी क़ाफ़िलों का शैदाई बनाए और जद्वल के मुत़ाबिक़ म-दनी क़ाफ़िलो में सफ़र करने की त़ौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

जो भी शैदाई है म-दनी क़ाफ़िलों का या ख़ुदा
दो जहां में उस का बेड़ा पार फ़रमा या ख़ुदा
तीन दिन हर माह जो अपनाए म-दनी क़ाफ़िला
बे ह़िसाब उस का ख़ुदाया ! ख़ुल्द में हो दाख़िला

(वसाइले बख़्शिश)

www.dawateislami.net

ماخذومراجع

❋	قرآنِ مجید	کلام الٰہی	❋ ❋ ❋ ❋
نمبر شمار	**نام کتاب**	**مصنف/مؤلف**	**مطبوعہ**
1	کنزالایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضاخان، متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ ۱۴۳۲ھ
2	خزائن العرفان	صدرالافاضل مفتی نعیم الدین مرادآبادی، متوفّٰی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ ۱۴۳۲ھ
3	تفسیر نعیمی	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	مکتبہ اسلامیہ مرکز الاولیا لاہور
4	تفسیر الخازن	علاء الدین علی بن محمد بغدادی، متوفّٰی ۷۴۱ھ	المطبعۃ المیمنیہ مصر ۱۳۱۷ھ
5	صحیح البخاری	امام ابوعبداللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفّٰی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
6	صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج قشیری نیشاپوری، متوفّٰی ۲۶۱ھ	دار ابنِ حزم بیروت ۱۴۱۹ھ
7	المعجم الصغیر	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی، متوفّٰی ۳۶۰ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۰۳ھ
8	المعجم الکبیر	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفّٰی ۳۶۰ھ	داراحیاء التراث العربی ۱۴۲۲ھ
9	مرأۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور
10	الشفا	امام ابوفضل عیاض بن موسیٰ بن عیاض مالکی، متوفّٰی ۵۴۴ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
11	القول البدیع	حافظ محمد بن عبدالرحمٰن السخاوی، متوفّٰی ۹۰۶ھ	مؤسسۃ الریان بیروت
12	المواہب اللدنیۃ	شہاب الدین احمد بن محمد قسطلانی، متوفّٰی ۹۲۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۶ھ
13	فتاویٰ رضویہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضاخان، متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیا لاہور
14	بہارِ شریعت	صدر الشریعہ مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفّٰی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
15	تذکرۃ الاولیا	شیخ فرید الدین عطار، متوفّٰی ۶۳۷ھ	انتشاراتِ گنجینہ تہران ۱۳۷۹ھ
16	انوارِ رضا	ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیا لاہور	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور
17	حیاتِ اعلیٰ حضرت	ملک العلماء محمد ظفر الدین بہاری، متوفّٰی ۱۳۸۲ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

❋ ... ❋ ... ❋ ... ❋ ... ❋

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	2	बद मज़हब सय्यिद का हुक्म	16
सय्यिद की ता'रीफ़	3	सरकार عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द सब से अफ़्ज़ल	18
अमीरे अहले सुन्नत और सय्यिद ज़ादे का अदब	3	सब से अफ़्ज़ल उम्मत	18
सादाते किराम की अ़-ज़मत	5	उम्मते मुह़म्मदिय्यह के फ़ज़ाइल	20
सादाते किराम की ता'ज़ीमो तक्रीम की वज्ह	7	किसी को हंसता देख कर पढ़ने की दुआ़	22
अ़-ज़-मते सादाते किराम और इमाम अह़मद रज़ा ख़ान	10	बारह माह के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र का ज़ेह्न	25
सादाते किराम को मुलाज़िम रखना कैसा ?	12	जद्वल पर अ़मल करना ज़रूरी है	27
		मआख़िज़ो मराजेअ़	29
सय्यिद के नसब का सुबूत	14	फ़ेहरिस्त	30
ग़ैरे सय्यिद, सय्यिद होने का दा'वा करे तो ?	16	◈◈◈◈◈	

◈◈◈◈◈

www.dawateislami.net

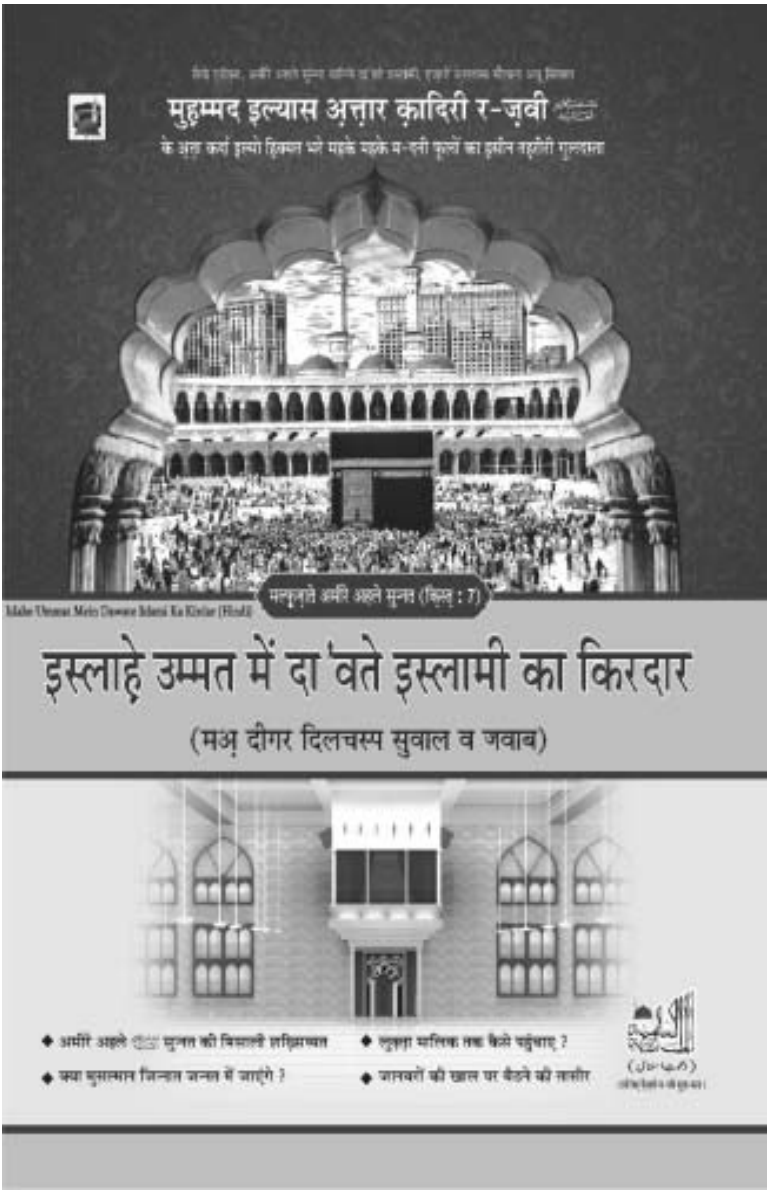

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े इ़शा आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ۞ सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ۞ रोज़ाना **"फ़िक्रे मदीना"** के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ में अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा म-दनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ के लिये **"म-दनी इन्आ़मात"** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"म-दनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है।

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net